वर्ष 3 अंक 1 अक्टूबर 2024

इतिहास समाचार

www.creativehistory.in

क्रिएटिव हिस्ट्री ट्रस्ट की गतिविधियों का मुखपत्र

इतिहास समाचार ग्रामीण इतिहास, भारतीय ज्ञान की परंपरा, सामाजिक विकास, लोक-स्मृति आदि के आकलन एवं संकलन-संयोजन के लिए कार्यरत क्रिएटिव हिस्ट्री ट्रस्ट की गतिविधियों का मुखपत्र है, जिसका प्रकाशन अपने सदस्यों और इतिहास में दिलचस्पी रखने वाले देश-विदेश के बौद्धिकों के बीच निःशुल्क वितरण के लिए किया जाता है। यह ग्रामीण इतिहास, लोक-स्मृति, भारतीय समाज, ज्ञान की परम्पराएँ, संस्कृति, भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के सेनानियों और उपेक्षित इतिहास के उस पक्ष के दस्तावेजीकरण के लिए प्रतिबद्ध है, जिसे अमहत्त्वपूर्ण मानकर मुख्यधारा के चिंतकों एवं इतिहासकारों द्वारा छोड़ दिया जाता है।

सलाहकार समिति

डॉ. देवेंद्र चौबे, महेंद्र प्रसाद सिंह, अनिल कुमार गोयल, डॉ. हितेंद्र कुमार पटेल, डॉ. कुमार कौस्तुभ, प्रदीप कुमार और डॉ. उज्ज्वल आलोक (संयोजक)

संपादक-मण्डल

डॉ. रश्मि चौधरी, डॉ. आशीष कुमार पांडेय, डॉ. अजय कुमार यादव, प्रियंका कुमारी और डॉ. नीलम

विशेष परामर्श

नागेंद्र नाथ ओझा, डॉ. एस. एन. आर. रिजवी, लीलाधर मंडलोई, प्रशांत सी. वाजपेयी, डॉ. जे. एन. सिन्हा, सुरेश कांटक, डॉ. दीपक कुमार राय, डॉ. बद्रीनारायण, डॉ. मणींद्र नाथ ठाकुर, डॉ. अखलाक अहमद आहन, डॉ. रामप्रसाद भट्ट, डॉ. रेणु शाह, सुनील सुधाकर, डॉ. अविरल पांडेय, डॉ. पी. रवि, विद्याशंकर चौबे, रमाकांत उपाध्याय, दिव्य विजय सिंह, डॉ. शशांक शेखर, लक्ष्मीकांत मुकुल, डॉ. छाया चौबे, समदर्शी संजय, अनिल कुमार पाठक, वृजभूषण चौबे, अजय कुमार, पूनम कुदेसिया, डॉ. सीमा पटेल, शकील अंसारी, सत्येंद्र कुमार चौबे और अखिलेश कुमार पांडेय

कॉपी एडिटर / विशेष सहयोग / ग्रामीण सहयोग

डॉ. संतोष भारद्वाज, डॉ. संजय कुमार, डॉ. खुशी पटनायक, आमिर हमजा, श्याम जी चौबे और जितेंद्र चौधरी

*संपादन / संचालन / परामर्श / सहयोग पूर्णतः अवैतनिक और अव्यवसायिक

आगामी आयोजन

12वीं सर्जनात्मक इतिहास / रंगश्री वार्षिक सम्मेलन 2024

परिसंवाद, बातचीत, व्याख्यान एवं काव्य-पाठ

मेरा गाँव, मेरा इतिहास / My Village, My History

रविवार, 10 नवंबर 2024, प्रातः 10 बजे से

18वीं कुँवर सिंह स्मृति व्याख्यान,

12वीं रामायण चौबे स्मृति लोक व्याख्यान

और

5वीं कुमार नयन स्मृति ग्रामीण इतिहास व्याख्यान 2024

स्थान : जय किसान इंटर कॉलेज, पूठी गाँव, मेरठ, उ.प्र.

2nd Creative History Annual Lecture 2025 in Delhi

आयोजक : Creative History Trust, Delhi

सौजन्य : रंगश्री, परम्परा /JNU Scholars Group & Buxar School of History

ज्ञान और लोक समाज का इतिहास है ग्रामीण इतिहास

मंगल पांडेय के गाँव नगवा में 11वीं सर्जनात्मक इतिहास वार्षिक सम्मेलन 2023 सम्पन्न; इतिहास समाचार के अक्टूबर 2023 का हुआ लोकार्पण

बलिया : "ग्रामीण इतिहास मूलतः ज्ञान और लोक समाज के संघर्ष का इतिहास है। भारत के गाँवों में बिखरे भारतीय इतिहास के स्रोत ये बतलाते हैं कि बिना ग्रामीण समाज की स्मृतियों में मौजूद स्रोतों के उपयोग के इतिहास लेखन हमेशा अधूरा रहेगा। ये स्रोत यह भी बतलाते हैं कि मानव समाज के संघर्ष के इतिहास में कृषि संस्कृति की एक बड़ी भूमिका रही है जिसे इतिहास लेखन की प्रक्रिया में विस्मृत कर दिया गया।" 1857 के सेनानी मंगल पांडेय के गाँव नगवा में क्रिएटिव हिस्ट्री ट्रस्ट द्वारा रंगश्री, परम्परा/जेएनयू स्कॉलर्स ग्रुप और बक्सर इतिहास संस्थान के सौजन्य से आयोजित 11वें क्रिएटिव हिस्ट्री वार्षिक सम्मेलन 2023 के मेरा गाँव, मेरा इतिहास विषयक परिसंवाद में ये बातें उभरकर सामने आई। कार्यक्रम में 16वीं कुँवर सिंह स्मृति व्याख्यान देते हुए प्रसिद्ध लेखक जनार्दन राय ने जहां इतिहास लेखन में गाँव के समाज को ज्ञान की परंपरा का केंद्र बताया, वहीं 11वीं रामायण चौबे स्मृति व्याख्यान देते हुए आलोचक श्रीपत यादव ने बलिया क्षेत्र में मौजूद भारतीय ज्ञान की परंपरा और लोक समाज के साथ उसके जीवन संबंध को महत्वपूर्ण बताया। ग्रामीण चिंतक कंवलजीत सिंह ने भाषा, वेशभूषा और अन्नोत्पादन की परंपरा को इतिहास लेखन के केंद्र में रखने की बात की। अध्यक्षता करते हुए चिंतक बी. एन. पांडेय ने कहा कि लोकगीतों और संस्कारों में गाँव का इतिहास छुपा हुआ है। कार्यक्रम का प्रारंभ 1857 के शहीद मंगल पांडेय के दुर्लभ वास्तविक चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलित करके हुआ। स्वागत युवा अध्येता आशीष पांडेय ने किया। इतिहासकार रश्मि चौधरी ने देश के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के नायक मंगल पांडेय के योगदान को याद किया। चर्चित लेखक देवेन्द्र चौबे ने कहा कि "बलिया, बक्सर और बनारस का क्षेत्र मूलतः प्राचीन ज्ञान और दर्शन, कृषि कार्य एवं ब्रिटिश उपनिवेशवाद तथा साम्राज्यवाद के खिलाफ प्रतिरोध की चेतना के निर्माण का रहा है। ग्रामीण इतिहास लेखन की प्रक्रिया में इन संदर्भों को सामने लाना जरूरी है।" कार्यक्रम का संचालन आर्यन पांडेय एवं धन्यवाद ज्ञापन अंजनी कुमार पांडेय ने किया।

भारत के बौद्धिक इतिहास की विस्मृत परंपराओं के इतिहास का दस्तावेजीकरण जरूरी है

क्रिएटिव हिस्ट्री का पहला वार्षिक व्याख्यान सम्पन्न, वेबसाईट www.creativehistory.in का हुआ उद्घाटन

दिल्ली : "भारत में ज्ञान की अनेक धाराएँ रही हैं। एक समय बिहार के वैशाली के आसपास का क्षेत्र उसका केंद्र रहा, जहाँ हिंदू, बौद्ध, जैन आदि ज्ञान एवं दर्शन की अनेक परम्पराओं के बीच संवाद हुआ। बौद्धिक इतिहास की इन विस्मृत परंपराओं की खोज और उसका दस्तावेजीकरण करना जरूरी है।" ये बातें क्रिएटिव हिस्ट्री ट्रस्ट द्वारा समाजवादी शिक्षा संस्थान, रंगश्री, परम्परा/जेएनयू स्कॉलर ग्रुप और बक्सर इतिहास संस्थान के सौजन्य से दिल्ली के सेकुलर हाउस में आयोजित पहला क्रिएटिव हिस्ट्री वार्षिक व्याख्यान 2024 में राजनीतिक समाजशास्त्री मणीन्द्र नाथ ठाकुर ने कही। 17वीं कुँवर सिंह स्मृति व्याख्यान देते हुए लेखक अखलाक अहमद आहन ने कहा कि "1857 का संघर्ष सिर्फ राजनीतिक ही नहीं था, बल्कि उसके सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ भी थे।" अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए कवि लीलाधर मंडलोई ने जहां इतिहास लेखन के साहित्यिक स्रोतों की बात की, वहीं इतिहासकार एस. एन. आर. रिजवी ने इतिहास पर हो रहे हमले और बन रहे नए इतिहास पर बारीकी से विचार करने की मांग की। इतिहासकार रश्मि चौधरी ने हाल के वर्षों में समाज विज्ञान के क्षेत्र में आए सैद्धांतिक बदलाव की ओर संकेत किया, वहीं सामाजिक चिंतक प्रशांत सी. बाजपेई ने 1857 के महत्व पर बात किया। नाटककार महेंद्र प्रसाद सिंह ने कला की दुनिया में बन रहे नए संदर्भों पर विचार करने की बात कही। देवेंद्र चौबे ने कहा कि "ग्रामीण इतिहास की यह नई धारा भारतीय इतिहास के उन पन्नों को टटोलने का प्रयास कर रही है जिसे मुख्यधारा के इतिहासकारों ने विस्मृत कर दिया था।" कार्यक्रम के अंत में युवा अध्येयताओं में धीरेश तिवारी, अभिषेक पाण्डेय, पुष्पराज यादव, दिव्य प्रकाश और गनेशी लाल सहित पूनम एस. कुदेसिया ने 10 मई क्रांति की याद में 1857 में रचित कविताओं का पाठ किया। धन्यवाद ज्ञापन करते हुए क्रिएटिव हिस्ट्री ट्रस्ट के सचिव आशीष कुमार पाण्डेय कहा कि "क्रिएटिव हिस्ट्री इतिहास के क्षेत्र में एक नया प्रयोग है।"

क्रिएटिव हिस्ट्री के वेबसाइट का हुआ उदघाटन

दिल्ली : 10 मई 1857 की क्रांति की याद में क्रिएटिव हिस्ट्री द्वारा ग्रामीण इतिहास एवं इतिहास के नए स्रोतों पर केंद्रित हुए कार्यक्रम में वेबसाइट www.creativehistory.in का लोकार्पण हुआ, ताकि इसके माध्यम से सृजनात्मकता और नए इतिहास का दस्तावेजीकरण हो सके। वेबसाईट का उदघाटन करते हुए क्रिएटिव हिस्ट्री की सलाहकार समिति के सदस्य एवं वित्तीय विशेषज्ञ अनिल कुमार गोयल, TERiX के मुख्य कार्यकारी अधिकारी कृष्णा कुमार और क्रिएटिव हिस्ट्री की मैनेजिंग ट्रस्टी रश्मि चौधरी ने कहा कि "यह प्रयास क्रिएटिव हिस्ट्री के कार्य का पूरी दुनिया में प्रसार करेगा।" ज्ञातव्य हो कि क्रिएटिव हिस्ट्री के वेबसाईट का निर्माण कृष्ण कुमार के

निर्देशन में उनके सहयोगी पंकज रावत एवं क्रिएटिव हिस्ट्री वेबसाईट समिति के सदस्यों और अध्येताओं में राजकुमार संदीप मण्डल, सुनील सुधाकर, आशीष कुमार पाण्डेय, सत्येन्द्र कुमार चौबे आदि द्वारा किया गया है।

बक्सर के ग्रामीण क्षेत्र में मौजूद है भारतीय इतिहास के असंख्य स्रोत

प्रसिद्ध लेखक शिवपूजन सहाय के गाँव में हुआ 9वाँ बक्सर ग्रामीण लेखक इतिहासकार परिसंवाद 2023

उनवाँस : "बक्सर के ग्रामीण क्षेत्र में भारतीय इतिहास के असंख्य स्रोत मौजूद हैं।" ये बातें क्रिएटिव हिस्ट्री द्वारा आचार्य शिवपूजन सहाय के गाँव उनवाँस के एस. पी. एस. पब्लिक स्कूल के सभागार में आयोजित 11वें सर्जनात्मक इतिहास सम्मेलन 2023 में उभरकर सामने आई। प्रारंभ में ग्रामीण इतिहास लेखन से जुड़े देवेंद्र चौबे ने कहा कि "ग्रामीण इतिहास, इतिहास लेखन की प्रक्रिया को लोक मन और उनकी स्मृतियों से जोड़ता है जो इतिहास को अभिलेखागारों से बाहर निकालता है।" चौथा कुमार नयन स्मृति ग्रामीण इतिहास व्याख्यान देते हुए लेखक धन्नुलाल प्रेमातुर ने कहा कि "बक्सर क्षेत्र का इतिहास लोक समाज की स्मृतियों का इतिहास है।" व्याख्यान प्रसंग की चर्चा करते हुए इतिहासकार और क्रिएटिव हिस्ट्री की अध्यक्ष रश्मि चौधरी ने कहा कि "इतिहास लोक में मौजूद छोटे-छोटे संकेतों से निर्मित होता है।" पत्रकार शशांक शेखर ने ग्रामीण इतिहास लेखन में गाँवों में बिखरे ऐतिहासिक

स्रोतों को समेटने की बात की। कवि इतिहासकार लक्ष्मीकांत मुकुल ने धनसोई और दिनारा क्षेत्र के इतिहास का उल्लेख किया। वैरागी प्रभाष कुमार चौबे ने क्रिएटिव हिस्ट्री की दृष्टि की तारीफ की कि वह इतिहास की एक नई धारा का निर्माण कर रही है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए अधिवक्ता रामेश्वर प्रसाद वर्मा ने कहा कि "कुमार नयन बक्सर क्षेत्र के जीवंत इतिहास थे।" संचालन करते हुए युवा अध्येता छाया चौबे ने कहा कि "ग्रामीण इतिहास, भारतीय इतिहास की एक नई सोच है।"

उज्ज्वल कुमार और लकी कुमारी को मिली वार्षिक छात्रवृत्ति, स्कूल में फोटो प्रदर्शनी का हुआ उद्घाटन

उनवाँस : क्रिएटिव हिस्ट्री के 11वें वार्षिक सम्मेलन के प्रारंभ में उनवाँस के एस. पी. एस. पब्लिक स्कूल के ग्रामीण विद्यार्थी उज्जवल कुमार और लकी कुमारी को कक्षा में अधिक अंक प्राप्त करने के लिए क्रमशः एन. के. चौधरी स्मृति और मोनाको देवी स्मृति वार्षिक छात्रवृति प्रदान किया गया। इस अवसर पर स्कूल के विद्यार्थियों द्वारा इतिहास के नायकों पर बनाई गई एक फोटो प्रदर्शनी का उद्घाटन भी किया गया।

क्रिएटिव हिस्ट्री ट्रस्ट की पहली कार्यकारिणी (2022-25)

रश्मि चौबे; इतिहासकार, ट्रस्ट की संस्थापिका और कार्यकारिणी की अध्यक्ष। रमाकांत उपाध्याय; तकनीकी विशेषज्ञ, ट्रस्ट के उपाध्यक्ष। आशीष कुमार पाण्डेय; युवा चिंतक, ट्रस्ट के सचिव। प्रियंका कुमारी; युवा अध्येता, ट्रस्ट की संयुक्त सचिव। अखिलेश कुमार पाण्डेय; रंगकर्मी, ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष। कार्यकारिणी के सदस्य : दीपक कुमार राय, इतिहासकार; गणपत तेली युवा आलोचक; बृजभूषण चौबे, इतिहास चिंतक; आरती, युवा अध्येता; नीलम रानी, युवा अध्येता और संजय कुमार, युवा अध्येता।

सलाहकार समिति (2022-25)

देवेंद्र चौबे; चर्चित लेखक और शिक्षाविद्; सलाहकार समिति के अध्यक्ष। सलाहकार समिति के सदस्य : महेंद्र प्रसाद सिंह; रंगकर्मी। अनिल कुमार गोयल; वित्तीय मामलों के जानकार। हितेन्द्र कुमार पटेल; इतिहासकार। कुमार कौस्तुभ; पत्रकार। प्रदीप कुमार; युवा अध्येता। उज्ज्वल आलोक; युवा आलोचक एवं सलाहकार समिति के संयोजक।

अहिरौली, बक्सर में बनेगा इतिहास स्तंभ और अभिलेखागार

बक्सर : क्रिएटिव हिस्ट्री की परिकल्पना करने वाले चर्चित लेखक देवेंद्र चौबे और इतिहासकार रश्मि चौधरी ने बताया कि बक्सर क्षेत्र के इतिहास के दस्तावेजीकरण के लिए शीघ्र ही क्रिएटिव हिस्ट्री द्वारा अहिरौली, बक्सर के गंगा तट पर एक इतिहास स्तंभ का निर्माण करवाया जायेगा जो बक्सर क्षेत्र के ऐतिहासिक संदर्भों को जन समाज से जोड़ेगा। इसके साथ ही अहिरौली के ग्रामीण समाज द्वारा पुनरुद्धार किए जा रहे नवनिर्मित अहिल्या मंदिर से जुड़कर बक्सर क्षेत्र के मिथ और इतिहास पर केंद्रित एक अभिलेखागार का निर्माण भी किया जायेगा।

शाहबाद-बक्सर के ग्रामीण क्षेत्र में हुए कुछ बड़े युद्ध

भारतीय इतिहास या पूरी दुनिया के इतिहास में जो युद्ध हुए हैं, उनका गहरा असर ग्रामीण क्षेत्रों पर पड़ा है। इन युद्धों ने संबंधित ग्रामीण क्षेत्र की कृषि, कृषि संस्कृति, संरचनाएँ, प्रकृति और यहाँ तक कि नदियों-तालाबों के जल को भी प्रभावित किया है। उन्हीं में से शाहबाद-बक्सर क्षेत्र में हुए चार युद्ध हैं :

1539 : चौसा गाँव में हुआ चौसा-युद्ध : मुगल बादशाह हुमायूँ और शेरशाह सूरी के बीच हुआ युद्ध। इसमें मुगल बादशाह युद्ध हार गए। शेरशाह सूरी दिल्ली के बादशाह बने।

1764 : कथकौली गाँव में हुआ बक्सर-युद्ध : बंगाल के नवाब मीर कासिम, दिल्ली के शाह आलम और लखनऊ के नवाब शुजाउदौला की संयुक्त सेना एवं ईस्ट इंडिया कंपनी के हेक्टर मुनरो के बीच हुआ युद्ध। इस युद्ध के दो स्थानीय योद्धा थे जो लड़ते हुए मारे गए - सैयद अब्दुल गुलाम और अब्दुल कादिर रहमतुल्लाह।

1857-58 : जगदीशपुर क्षेत्र में हुआ 1857 का संग्राम : कुँवर सिंह और दानापुर के विद्रोही सिपाहियों के साथ अंग्रेजी सेना एवं ली ग्रांड के बीच 23 अप्रैल 1858 का युद्ध। इसमें अंग्रेज सेनापति ली ग्रांड की करारी हार हुई।

बक्सर युद्ध के 260 वर्ष : इतिहास, अनुभव, स्मृतियाँ और चुनौतियाँ विषयक परिसंवाद

बक्सर, 22 अक्टूबर 2024 : "आज भी 1764 में हुए बक्सर युद्ध के केंद्र रहे कथकौली के किसान मजदूर परिवार युद्ध की त्रासदी की छाया में जी रहे हैं। बक्सर के ऐतिहासिक तथ्यों को सहेजने के लिए एक विस्तृत गजेटियर की आवश्यकता है, जो बक्सर के समृद्ध अतीत को उजागर कर सके।" ये बातें बक्सर इतिहास संस्थान और क्रिएटिव हिस्ट्री द्वारा आयोजित परिसंवाद में उभरकर आयी। कार्यक्रम में लक्ष्मीकांत मुकुल, महेन्द्र प्रसाद, गणेश उपाध्याय, रामेश्वर प्रसाद वर्मा, निर्मल सिंह, राजा रमण पाण्डेय, शिव बहादुर पाण्डेय प्रितम, बासुकी नाथ पाण्डेय, सत्या पाण्डेय, राजकुमार ठाकुर, पवनंदन केसरी और संयोजक शशांक शेखर आदि ने अपने विचार रखे।

उपलब्धियाँ

वर्ष 2024 का साहित्य का नोबेल पुरस्कार मिला दक्षिण कोरिया की प्रसिद्ध लेखिका हान कांग को। कथाकार और आलोचक विनोद शाही आधार सम्मान 2023 से सम्मानित हुए। क्रिएटिव हिस्ट्री से जुड़े युवा आलोचक अजय कुमार यादव और संजय कुमार की नियुक्ति सहायक प्रोफेसर के रूप में क्रमशः दिल्ली विश्वविद्यालय के सत्यवती कॉलेज एवं कोटा के जय मिनेश विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में हुई।

क्रिएटिव हिस्ट्री के मित्र और सहयोगी

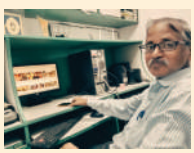

अनूप मेंदोला 2010 से क्रिएटिव हिस्ट्री से जुड़े हुए हैं। ये दिल्ली में रहने वाले एक ग्रामीण और श्रमिक बुद्धिजीवी हैं, पर इनका मन गाँव में बसता है। क्रिएटिव हिस्ट्री के पोस्टर, बैनर, कार्ड आदि हर चीज पर बहुत मेहनत करते हैं। मन से काम करते हैं। इतिहास से इतना गहरा लगाव हो गया है कि 2022 में जब इन्हें पता चला कि क्रिएटिव हिस्ट्री की 10वीं कांफ्रेंस इनके गृह राज्य उत्तराखंड में हो रही है तो बिना किसी झिझक के हमसे एक दिन पहले जयहरीखाल पहुंच गए। कार्यक्रम में सारी बातें ध्यान से सुनते रहे। लोगों से बात किया और सबको पहाड़ की चाकलेट मिठाई भी खिलाई। ऐसे ही ग्रामीण बुद्धिजीवियों से क्रिएटिव हिस्ट्री की ग्रामीण इतिहास कार्यशाला को ताकत मिलती है।

ग्रामीण मेला : मेरठ का नौचंदी मेला

नौचन्दी मेला उत्तर प्रदेश के प्रसिद्ध मेलों में से एक है। यह मेला मेरठ में प्रति वर्ष लगता है। यहाँ का ऐतिहासिक नौचंदी मेला हिन्दू-मुस्लिम एकता का प्रतीक है। हजरत बाले मियां की दरगाह एवं नवचण्डी देवी (नौचन्दी देवी) का मंदिर एक दूसरे के निकट ही स्थित हैं। मेले के दौरान मंदिर के घण्टों के साथ अजान की आवाज एक सांप्रदायिक अध्यात्म की प्रतिध्वनि देती है। यह मेला चैत्र मास के नवरात्रि त्यौहार से एक सप्ताह पहले लगभग होली के एक सप्ताह बाद लगता है और एक माह तक चलता है। नौचन्दी यानी नव चंडी। इसी नाम से यहाँ एक मंदिर भी है। बगल में ही बाले मियां की मजार है। जहाँ मंदिर में रोजाना भजन-कीर्तन होते हैं, वहीं मजार में कव्वाली व कवि सम्मलेन। यह मेला प्रति वर्ष लगता है और यह ऐतिहासिक हिन्दू-मुस्लिम एकता का प्रतीक है। इसमें हमारे देश की संस्कृति की झलक मिलती है।

साहित्य और इतिहास के अध्येताओं के साथ एक बौद्धिक शाम

जेएनयू : पिछले दिनों परंपरा जेएनयू स्कॉलर ग्रुप के इतिहास लेखन समूह की 17वीं बैठक में हुई जिसमें देश-विदेश से विचार विमर्श में शामिल अध्येताओं में मुख्य थे- इंदिरा गाजियेवा (रूस), उल्फत मुहीब (उज़्बेकिस्तान), शियोंग छन श्यू, वाँग मेई चेन (चीन), देवेंद्र चौबे, अखलाक अहमद आहन, रश्मि चौधरी, अजय यादव, संजय कुमार, आशीष पांडेय, गनेशी लाल, आमिर हमजा, पुष्पराज यादव, धीरेश तिवारी, दिव्य प्रकाश आदि। ज्ञातव्य हो कि समूह द्वारा 5 खंडों में लिखे जा रहे इस इतिहास श्रृंखला के दो खंड आधार प्रकाशन से क्रमशः 2021 (हिंदी साहित्य का इतिहासः कुछ पाठ, कुछ विचार) और 2023 (हिंदी साहित्य का इतिहास : कुछ पाठ, कुछ विमर्श) में प्रकाशित हो चुके हैं तथा शेष तीन खंडों का प्रकाशन क्रमशः 2025, 2027 और 2029 में होना है।

नन्द चतुर्वेदी रचनावली और खराबात का हुआ लोकार्पण

उदयपुर/दिल्ली : पिछले दिनों उदयपुर में युवा लेखक पल्लव द्वारा संपादित प्रसिद्ध कवि नन्द चतुर्वेदी रचनावली का लोकार्पण हुआ।

कार्यक्रम में नन्द किशोर आचार्य, दामोदर खड़से, माधव हाड़ा, अरुण चतुर्वेदी, अनुराग चतुर्वेदी, अजय शर्मा आदि विद्वान शामिल थे। वहीं दिल्ली में फारसी के शायर अखलाक अहमद आहन की कविता की नई किताब 'खराबात' का लोकार्पण हुआ। इस कार्यक्रम में शायर और विधि विशेषज्ञ खलीलूर रहमान, उर्दू के विद्वान ख्वाजा मोहम्मद इकरामुद्दीन, समाज वैज्ञानिक मणींद्र नाथ ठाकुर, अफगानी कथाकार अब्दुल खालिक राशिद आदि ने अपने विचार रखे और अध्यक्षता प्रसिद्ध विद्वान अनीसुर रहमान ने किया। कार्यक्रम के आरंभ में युवा अध्येता फातिमा ने शायरी का पाठ किया।

भाषा और जिंदगी की समझ पैदा करता है नाटक माइंडसेट

दिल्ली : पिछले दिनों दिल्ली के लोदी स्टेट स्थित फ्रांसिस एलियंस के सभागार में प्रसिद्ध रंगकर्मी महेंद्र प्रसाद सिंह द्वारा लिखित और निर्देशित नाटक माइंडसेट का मंचन हुआ जिसमें लेखक सहित सौमित्र वर्मा, अखिलेश कुमार पाण्डेय, गौरव कुमार आदि कलाकारों ने अभिनय किया है। नाटक ने दर्शकों को पूरे समय तक बांधे रखा। संवाद अच्छे थे, प्रस्तुति बहुत बढ़िया थी। कला की दुनिया ऐसी ही होती है।

विश्व पुस्तक मेला 2024 में देवताओं का मौन

दिल्ली : विश्व पुस्तक मेला 2024 में प्रलेक प्रकाशन के स्टाल पर समूह से जुड़े राजीव मुद्गल की किताब 'देवताओं का मौन' के लोकार्पण में यह बात उभरकर आई कि "यह दर्शन और विचार की किताब है जिसे लंबे समय तक पढ़ा जाएगा।" कार्यक्रम में कवि लीलाधर मंडलोई, प्रसिद्ध कथाकार चित्रा मुद्गल, इतिहासकार रश्मि चौधरी, कथाकार और पत्रकार महेश दर्पण, चिंतक शैली मुद्गल, अनुवादक राजेंद्र प्रसाद मिश्र, आलोचक करुणाशंकर उपाध्याय आदि ने हिस्सा लिया।

ग्रामीण इतिहासकार : राहुल सांकृत्यायन

हिंदी में महापंडित की उपाधि से विभूषित राहुल सांकृत्यायन लगभग 30 भाषाओं को जानने वाले तथा करीब 140 किताबें लिखने वाले इकलौते शख्स हैं। इनकी विषय वस्तु भाषा, साहित्य, समाज, इतिहास, राजनीति, यात्रा, धर्म और दर्शन तक विस्तृत है। अपने विद्रोही स्वभाव के कारण न तो वे स्कूली शिक्षा पूरी कर पाए, न ही किसी दायरे में बंध पाए। घुमक्कड़शास्त्र लिखने वाले राहुल सांकृत्यायन सच्चे घुमक्कड़ थे। घुमक्कड़ी उनके लिए गतिशीलता का पर्याय थी। उन्होंने न केवल दुर्गम बल्कि मुख्यधारा से अलगे-थलग पड़े ग्रामीण क्षेत्रों की भी यात्राएँ की तथा उन क्षेत्रों के समाज और वहाँ की संस्कृति को भी समझा। यात्रा में ग्रामीण क्षेत्र में मिले छोटे-छोटे ब्योरे को ध्यान से देखा, नोट किया और लेखन की दुनिया का हिस्सा बनाया। उत्तरी बिहार के किसानों के लिए संघर्ष किया, लड़े और इतिहास के उन संदर्भों से हिन्दी लेखन को जोड़ा, जो ग्रामीण इतिहास को समझने में मदद करते हैं।

ग्रामीण समाज की गतिशीलता और इतिहास को समझने में मदद करती है, पंचकोशी मेला

दिल्ली : "भारत त्योहारों तथा मेलों का देश है। दुनिया का सबसे महत्वपूर्ण एवं बड़ा कुंभ मेला यूनेस्को की धरोहर के रूप में सम्मिलित है। ऐसा ही बक्सर क्षेत्र में पंचकोशी मेला प्रसिद्ध है जहां पाँच ऋषि (गौतम, नारद, भार्गव, उदालक और विश्वमित्र), पाँच गाँव (अहिरौली, नादांव, भभुअर, नुआंव और व्याघ्रसर/बक्सर) तथा अनेक अन्य मान्यताओं को लिए हुए भारतीय ज्ञान का यह मेला सामाजिक जीवंतता का प्रतीक है।" ये बातें इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र में देवेंद्र चौबे की पंचकोशी मेला पर केंद्रित बातचीत में उभरकर आई। अध्यक्षता कर रहे राजनीतिक विचारक और राज्यसभा सांसद राकेश सिन्हा ने कहा कि "पुस्तक पंचकोशी मेला गाँवों में बिखरे पड़े सामाजिक ज्ञान को समझने में मदद करती है।" राजनीतिक समाजशास्त्री मणींद्र नाथ ठाकुर का मानना था कि "ऐसी किताबें गाँवों में बिखरे पड़े भारतीय ज्ञान, ज्ञान की सामाजिक परंपराएँ, कृषक जीवन और प्राचीन भारत की समाजिक-सांस्कृतिक गतिशीलता को समझने में मदद करती हैं, जो महत्वपूर्ण है।" बातचीत में रमेश चंद्र गौड़ (शिक्षाविद); अखलाक अहमद आहन (कवि); पंकज चतुर्वेदी (लेखक); के. अनिल कुमार (आईजीएनसीए) आदि ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम में प्रशांत सी. बाजपेई, पंकज कुमार, राजेश कुमार राजन, रश्मि चौधरी, बंदना झा, अजय कुमार यादव, अभय मिश्र, गनेशी लाल, अभिषेक पाण्डेय आदि सहित बड़ी संख्या में भारतीय ज्ञान परंपरा एवं ग्रामीण समाज की गतिशीलता में दिलचस्पी रखने वाले पाठक और श्रोता मौजूद थे।

"यह सदी स्मृतियों के लुप्त होने की है"

दिल्ली : "यह सदी स्मृतियों के लुप्त होने की है। दुनिया जिस तेजी से बदल रही है, उसमें आने वाले समय में मानव समाज की क्रियाशीलता के लिए बहुत कुछ नहीं बचेगा। साहित्य दुनिया के होने और बने रहने के बीच स्वत्त्व की खोज है।" मैनेजर पाण्डेय की स्मृति में जेएनयू के भाषा संस्थान के समिति कक्ष में चौथे हमारे समय का साहित्य श्रृंखला के तहत "21वीं सदी के सवाल और बौद्धिक विमर्शों की दुनिया" पर आयोजित परिसंवाद में ये बातें उभरकर सामने आई। पहला प्रो. मैनेजर पाण्डेय स्मृति सामाजिक विज्ञान व्याख्यान दिया मणीन्द्र नाथ ठाकुर ने और अध्यक्षता की संजय सहाय एवं अनुराग चतुर्वेदी ने। कार्यक्रम में रविभूषण, विनोद शाही, जी जे वी प्रसाद, उल्फत मुहिब, सविता सिंह, चमनलाल, मजहर मेहदी, ओमप्रकाश सिंह, देव शंकर नवीन, के. एम. इकराम, गोपाल प्रधान, आशुतोष कुमार, संजीव कुमार, संजय शर्मा, रजनीश कुमार मिश्र, रश्मि चौधरी, चंद्रा सदायत, कुमार कौस्तुभ, शोभा शिवशंकरन, सुधीर प्रताप सिंह, देवेंद्र चौबे, आशीष अग्निहोत्री, अनुज, हरी माधव रे, बजरंग बिहारी तिवारी, रश्मि चौधरी, बलवंत कौर, श्रीधरम, सरवर हुदा, अरुण देव, प्रज्ञा पाठक, स्मृति रंजिता, शियोंग चेन शू, नित्या अरावेंदन, रेखा पाण्डेय, धीरेश तिवारी, गनेशी लाल, अभिषेक पाण्डेय, पुष्पराज, दिव्यप्रकाश, प्रांजलि शिवहरे, रोशनी आदि ने अपने विचार रखे।

इतिहास की धरती : मेरठ क्षेत्र और गाँव पूठी

1857 के पहले भारतीय स्वाधीनता संघर्ष में मेरठ क्षेत्र और पूठी गाँव की भूमिका बहुत बड़ी रही है। अंग्रेजी शासन के खिलाफ हुए इस संघर्ष में 1857 के सेनानी हारे जरूर थे, पर दुनिया भर में इस क्रांति को ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन के खिलाफ आम जनता के प्रतिरोध के रूप में देखा गया। कहा जाता है कि 10 मई 1857 को मेरठ में हुए सैनिक विद्रोह की खबर मिलते ही पूर्वी क्षेत्र में क्रांतिकारियों ने राव कदम सिंह गुर्जर के नेतृत्व में आंदोलन शुरू कर दिया। उनके पीछे दस हजार से अधिक क्रांतिकारी थे जिन्होंने अंग्रेजों को परीक्षितगढ़ से लेकर मेरठ तक खदेड़ दिया था। यह एक बड़ा कदम था। इतना ही नहीं क्रांतिकारियों ने अंग्रेजों का यातायात और संचार ठप कर दिया। इन घटनाओं का गहरा असर 1857 के संग्राम पर पड़ा तथा दिल्ली के बादशाह बहादुर शाह जफर के नेतृत्व में हो रहे संघर्ष को इससे बड़ी ताकत मिली।

इतिहास के नायक : कान्हा रावत

भारतीय इतिहास के उत्तर मध्यकाल में अनेक ऐसे योद्धा हुए जिन्होंने राजसत्ता की नीतियों के खिलाफ बगावत की और अंत में मारे गए। उन्हीं योद्धाओं में हरियाणा के पलवल जिले की हथीन तहसील के बहीन गाँव के कान्हा रावत (1640-1684) भी एक हैं, जिन्हें बादशाह औरंगजेब की नीतियों के विरोध के कारण मार दिया गया। कहा जाता है कि औरंगजेब की सेना के टुकड़ी के नायक अब्दुल नबी के साथ संघर्ष में विजय प्राप्त किया। बाद में उन्हें छल से गिरफ्तार कर लिया गया तथा दिल्ली में अजमेरी गेट के पास जमीन में जिंदा दफन करवा दिया। बाद में लोगों ने वीर शहीद कान्हा रावत की शहादत के सम्मान में बहीन गाँव में एक गौशाला और उनकी मूर्ति की स्थापना की, जहां हर वर्ष उनके शहीदी दिवस पर दो दिन का मेला लगता है तथा कलाकार उनके जीवन को नाटक के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं ।

आखों देखा इतिहास : भोला देवी

चित्रकूट के बगरेही गाँव की एक सौ दस वर्षीया भोला देवी (जन्म 1914 ई) ने अंग्रेजी राज को भी देखा है और स्वाधीनता संग्राम को भी महसूस किया है। अशिक्षित हैं, पर दुनिया भर की जानकारी रखतीं हैं। यहाँ प्रस्तुत है, युवा अध्येता गनेशी लाल से हुई बातचीत के कुछ अंश :

आपने गोरे सिपाहियों को देखा है, जो विदेश से आये थे?

-हाँ! मैंने देखा है। वो लोग साइकिल से आते थे। लोग उनसे डरते थे। जैसे वे आते थे, लोग अपने घरों में घुस जाते थे।

आपके गाँवों के आसपास उस समय पुलिस-थाना होता था?

-नहीं, उस समय ये सब कुछ नहीं था। सिपाही आते-जाते थे। आज की तरह थाने नहीं होते थे और सिपाहियों को देख कर लोग भाग जाते थे।

जब देश आजाद हुआ था तब क्या हुआ था आपको कुछ याद है?

-हम लोग घर गाँव में रहते थे, इसलिए हमें ज्यादा पता नहीं चलता था लेकिन लोग बताते थे कि अब गोरे सिपाही नहीं आयेंगे, अब उनसे डरने की जरूरत नहीं है।

और उस समय का क्या याद है ?

-उस समय (आजादी के बाद) गाँव में सरकार के लोग आते थे, हमारे यहाँ लोगों को नौकरी देने के लिए कहते थे लेकिन नौकरी के नाम पर जाने से लोग डरते थे क्योंकि उससे पहले (अंग्रेज) सरकार के लोग किसी को अपने साथ ले जाते थे तो उसके साथ बहुत बुरा सुलूक करते थे।

किताबें : ख्याल साहित्य और इतिहास लेखन : विक्रमसिंह अमरावत; नन्द चतुर्वेदी रचनावली : सं. पल्लव; एक मनोचिकित्सक के नोट्स : विनय कुमार; उदास नदियों का दर्द : पंकज चतुर्वेदी; पर, जरूरी है कविता : देवेंद्र चौबे; यह, वह जेएनयू तो नहीं : देवेन्द्र चौबे, राजेश कुमार राजन, राकेश कुमार त्यागी।

आगामी प्रकाशन : ग्रामीण इतिहास, खंड 1

सं. - देवेंद्र चौबे, दीपक कुमार राय, रश्मि चौधरी, खंड 1 अवधारणा और संदर्भ; खंड 2 ग्रामीण इतिहास का स्थानीय संदर्भ; खंड 3 ग्रामीण इतिहास : वैचारिक संदर्भ; खंड 4 ग्रामीण इतिहास का राष्ट्रीय संदर्भ; खंड 5 ग्रामीण इतिहास का वैश्विक संदर्भ; परिशिष्ट : संदर्भ ग्रंथ सूची, लेखक परिचय और नामानुक्रमणिका।

क्रिएटिव हिस्ट्री ट्रस्ट, नई दिल्ली के लिए रश्मि चौधरी और अखिलेश कुमार पाण्डेय द्वारा प्रकाशित और स्वाति कम्युनिकेशन्स (+91-9213132174) द्वारा मुद्रित।

ग्रामीण इतिहासकार
जॉर्ज इवार्ट इवाँस

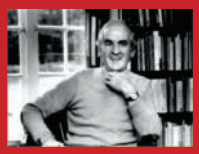

- प्रदीप कुमार, युवा अध्येता

जॉर्ज इवार्ट इवाँस (1909-1988) प्रगतिशील विचारधारा से जुड़े एक ब्रिटिश सामाजिक ग्रामीण इतिहासकार, लेखक, उपन्यासकार और लोकगीतकार थे। वे इंग्लैंड के ईस्ट एंग्लिया के सफोक के गाँवों के मौखिक इतिहास के दस्तावेजीकरण के लिए जाने जाते हैं। एसेक्स और कील विश्वविद्यालय ने उन्हें उनके कार्य के लिए मानद डॉक्टरेट की उपाधियाँ प्रदान की थीं। साउथ वेल्स विश्वविद्यालय में इनके नाम पर 2005 में 'जॉर्ज इवार्ट इवाँस सेंटर फॉर स्टोरीटेलिंग' की स्थापना की गई।

उनका लेखन इंग्लैंड के ग्रामीण जीवन के प्रामाणिक चित्रण के साथ-साथ इतिहास लेखन में स्मृति, परंपरा और सर्वसाधारण जनसमुदाय के महत्व को स्थापित करने की दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जाता है। यही कारण है कि उन्हें ऐतिहासिक शोध की एक विधि के रूप में मौखिक इतिहास का उपयोग करने वालों का पथ-प्रदर्शक अग्रदूत इतिहासकार माना जाता है। मौखिक बयान और साक्ष्य के महत्व पर जोर देते हुए उन्होंने ऐतिहासिक शोध की एक गंभीर विधि के रूप में मौखिक इतिहास को स्थापित करने में बड़ी भूमिका निभाई। गाँवों की एक दूसरे से घनिष्टता से जुड़े लोगों और समुदायों की ग्रामीण व्यवस्था और गहरी पुरातन कृषि परंपराओं ने उन्हें बेहद आकर्षित किया था। उन्हें जल्द ही एहसास हुआ था कि वेल्स की तरह ही ग्रामीण सफोक में भी जीवन का यह पुरातन तरीका आधुनिकीकरण, औद्योगीकरण और मशीनीकरण के कारण जल्द ही खतरे में आ जाएगा। इसलिए उन्होंने ग्रामीण समुदाय के साक्षात्कारों द्वारा कृषि पद्धतियों, ग्रामीण सामाजिक रीति-रिवाजों, लोक विश्वासों, शिल्प, कौशल, व्यापार और स्थानीय भाषा, बोलियों आदि का दस्तावेजीकरण करना शुरू किया ताकि वे बची रह सकें।

इसी कारण उन्होंने अपनी पहली प्रमुख कृति, 'आस्क द फेलोज हू कट द हे (1956)', - जो ग्रामीण सामाजिक इतिहास के क्षेत्र में एक मील का पत्थर है - में साक्षात्कारों के माध्यम से प्रकाश में आई सफोक की इन्हीं परंपराओं और रोजमर्रा की जिंदगी का विवरण प्रस्तुत करते हुए खेत मजदूरों और ग्रामीणों के प्रत्यक्ष अनुभवों का संकलन किया। इस पुस्तक की तेजी से लुप्त हो रही दुनिया के समृद्ध, विशद चित्रण और इसके लिए मौखिक इतिहास की पद्धति के नूतन अभिनव उपयोग के लिए भूरी भूरी प्रशंसा हुई। इसके बाद उन्होंने 'द हॉर्स इन द फरो (1960)' लिखीं, जो मशीनीकरण से पहले की कृषि में घोड़ों की भूमिका पर केंद्रित है, और 'व्हेयर बियर्ड्स वैग ऑल (1970)', जो पूर्वी एंग्लिया के बुजुर्ग लोगों के जीवन पर आधारित है। उनकी अन्य कृतियाँ 'द पैटर्न अंडर द प्लॉ (1966)';'द फार्म एंड द विलेज (1969)' 'द लीपिंग हरे (1972)'; 'द डेज दैट वी हैव सीन (1975)'; 'फ्रॉम माउथ्स ऑफ मेन (1976)'; 'हॉर्स पावर एंड मैजिक (1979)'; 'स्पोकन हिस्ट्री (1987)' आदि हैं। 'द क्रुक्ड साइथ (1993)' मरणोपरांत प्रकाशित हुईं।

क्रिएटिव हिस्ट्री ट्रस्ट
34/1, फ्लैट: ई-1, डेसू रोड, महरौली, नई दिल्ली-110030
ई-मेल: creativehistorygroup@gmail.com
वेबसाईट : www.creativehistory.in
रंगश्री, 72, पॉकेट-4, सेक्टर-12, द्वारका, नयी दिल्ली-110078

Established in 2022, Creative History Trust is a public charitable trust to promote creativity and history in society; specially in rural areas. The trust was registered in 2024 under section 80G(5) and 12AB(1)(b) of the Income Tax Act.

सन 2022 में स्थापित, क्रिएटिव हिस्ट्री ट्रस्ट समाज, विशेषकर ग्रामीण समाज में सृजनात्मकता और इतिहास के विकास के लिए रजिस्टर्ड, एक ट्रस्ट है जो इनकम टैक्स छूट की धारा 80G(5) और 12AB(1)(b) के अंतर्गत भी 2024 से मान्य है।